टिप्पणी

27

आखिरी चट्टान

हमारे देश में एक से बढ़कर एक आकर्षक प्राकृतिक दृश्य हैं—बर्फ से ढके पहाड़, कल-कल करतीं नदियाँ-झरने, हरे-भरे जंगल, लहलहाते खेत, दूर-दूर तक फैले हुए सागर। क्या इन्हें आप अपनी आँखों से नहीं देखना चाहेंगे? यदि हाँ ! तो निकल पड़िए घर से बाहर किसी लंबी यात्रा पर। संसार में बहुत से ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं। कोलंबस, मार्कोपोलो, वास्कोडिगामा, मेंगस्थनीज, फाइयान, राहुल सांकृत्यायन आदि साहसी यात्रियों से यदि आप थोड़ी-सी भी प्रेरणा ले सकें तो आपका जीवन अनेक रोमांचकारी अनुभवों से जुड़ जाएगा।

इसी कड़ी में एक नाम और भी है—मोहन राकेश। उनकी रचना 'आखिरी चट्टान' में उन्होंने बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर के मिलन-स्थल पर स्थित कन्याकुमारी के आस-पास के दृश्यों का चित्रात्मक वर्णन किया गया है। आइए, इस पाठ में हम प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का आनंद लें और उसकी सराहना करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भारत के दक्षिणी भाग की भौगोलिक जानकारी दे सकेंगे;
- कन्याकुमारी और उसके परिवेश का वर्णन कर सकेंगे।
- समुद्र के बीच में स्थित विवेकानंद चट्टान का वर्णन अपने शब्दों में लिख सकेंगे;
- कन्याकुमारी का सूर्योदय और सूर्यास्त के आनंददायक दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कर सकेंगे;
- यात्रा-वृत्तांत विधा के तत्त्वों के आधार पर 'आखिरी चट्टान' का विवेचन कर सकेंगे;
- लेखक की लालित्यपूर्ण भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप

क्या आप सूर्योदय से पूर्व उठते हैं? यदि नहीं, तो एक दिन उठिए और पूर्व की ओर मुख कीजिए। देखते रहिए पूर्व दिशा की ओर। देखिए पूर्वी आकाश में धीरे-धीरे एक अद्भुत लालिमा छा रही है। यही उषाकाल कहलाता है। और उस सूर्य की एक हल्की-सी लकीर ऊपर उठ रही है। देखते-ही-देखते सूरज का गोला अपनी किरणों के साथ कितनी तेज़ी से ऊपर उठ गया है। सूरज कितना गोल और लाल नज़र आता है, इसे ही बाल सूर्य कहते हैं। जिस सूरज को हम दिन में थोड़ी देर तक भी नहीं देख पाते, इस समय कितना कोमल और सुहावना लग रहा है।

अब इंतजार कीजिए शाम का। शाम होते ही पश्चिमी आकाश की ओर देखिए। सूरज का गोला फिर लाल हो गया है, आपके देखते-ही-देखते सूरज का निचला भाग दिखना बंद हो गया है। अरे यह क्या! सूरज का आधा हिस्सा कहाँ चला गया? और अब? सूर्य का पूरा गोला ही अदृश्य हो गया है। यह संध्याकाल है।

इन दोनों दृश्यों की तुलना कीजिए। कागज़-कलम लेकर अपने इस अनुभव का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

आइए, अब हम मोहन राकेश के इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं। पाठ बहुत सरल भाषा में है। आपकी सुविधा के लिए जहाँ कहीं कुछ कठिन शब्द आए हैं, वहीं हाशिए पर उनके अर्थ दे दिए गए हैं।

शब्दार्थ

- प ष्ठभूमि – पीछे का भाग
- समाधिस्थ – ध्यान मग्न
- क्षितिज – जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई दें
- चूरा बूँद – छोटी-छोटी बूँद, जलकण
- अपेक्षया – अपेक्षाकृत, बनिस्पत

27.1 मूलपाठ

आखिरी चट्टान

कन्याकुमारी। सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि।

केप होटल के आगे बने बाथ टैंक के बायीं तरफ़ समुद्र के अन्दर से उभरी स्याह चट्टानों में से एक पर खड़ा होकर मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी के मन्दिर की लाल और सफ़ेद लकीरें चमक रही थीं। अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी इन तीनों के संगम-स्थल-सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगायी थी, हर तरफ़ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी। हिन्द महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थीं। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था– शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति। तीनों तरफ़ से क्षितिज तक पानी-पानी था, फिर भी सामने का क्षितिज, हिन्द महासागर का, अपेक्षया अधिक दूर और अधिक गहरा जान पड़ता था। लगता था कि उस ओर दूसरा छोर है ही नहीं। तीनों ओर के क्षितिज को

आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ। एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा– बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान जब अपना होश हुआ, तो देखा कि मेरी चट्टान भी तब तक बढ़ते पानी में काफ़ी घिर गई है। मेरा पूरा शरीर सिहर गया। मैंने एक नज़र फिर सामने के उमड़ते विस्तार पर डाली और पास की एक सुरक्षित चट्टान पर कूद कर दूसरी चट्टानों पर से होता हुआ किनारे पर पहुँच गया।

पच्छिमी क्षितिज में सूर्य धीरे-धीरे नीचे जा रहा था। मैं सूर्यास्त की दिशा में चलने लगा। दूर पच्छिमी तट-रेखा के एक मोड़ पर पीली रेत का एक ऊँचा टीला नज़र आ रहा था। सोचा उस टीले पर जाकर सूर्यास्त देखूँगा।

यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं। हम लोग टीले पर पहुँच गये। यह वह 'सैंडहिल' थी जिसकी चर्चा मैं वहाँ पहुँचने के बाद से ही सुन रहा था। सैंडहिल पर बहुत से लोग थे। आठ-दस नवयुवतियाँ, छह-सात नवयुवक, दो-तीन गांधी टोपियों वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेन्ट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैडहिल बहुत रंगीन हो उठी थी। कन्याकुमारी का सूर्यास्त देखने के लिए उन्होंने विशेष रुचि के साथ सुन्दर रंगों का रेशम पहना था। हवा समुद्र की तरह उस रेशम में भी लहरें पैदा कर रही थी। मिशनरी युवतियाँ वहाँ आकर थकी-सी एक तरफ़ बैठ गयीं–उस पूरे केनवस में एक तरफ़ छिटके हुए कुछ बिन्दुओं की तरह। उनसे कुछ दूर पर एक रंगहीन बिन्दु, मैं, ज़्यादा देर अपनी जगह स्थिर नहीं रह सका। सैंडहिल से सामने का पूरा विस्तार तो दिखायी दे रहा था, पर अरब सागर की तरफ़ एक और ऊँचा टीला था जो उधर के विस्तार को ओट में लिये था। सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखा जा सके, इसके लिए मैं कुछ देर सैंडहिल पर रुका रहकर आगे उस टीले की तरफ़ चल दिया। पर रेत पर अपने अकेले कदमों को घसीटता हुआ वहाँ पहुँचा, तो देखा कि उससे आगे उससे भी ऊँचा एक और टीला है। जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किये। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता था कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नज़र आ जाएगा। और सचमुच एक टीले पर पहुँचकर वह खुला विस्तार सामने फैला दिखायी दे गया– वहाँ से दूर तक एक रेत की लम्बी ढलान थी, जैसे वह टीले से समुद्र में उतरने का रास्ता हो। सूर्य तब पानी से थोड़ा ही ऊपर था। अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो, और मैंने, सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।

पीछे दायीं तरफ़ दूर-दूर हटकर नारियलों के झुरमुट नज़र आ रहे थे। गूँजती हुई तेज हवा से उनकी टहनियाँ ऊपर को उठ रही थीं। पच्छिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी जो सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी। सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था। सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया-सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस

टिप्पणी

शब्दार्थ

सैंडहिल – रेत का टीला
मिशनरी – सेवा भाव वाले ईसाई
केनवस – खुला चित्रपट
सर करना – विजय, जीतना

टिप्पणी

तरह चमक रही थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेला गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा जैसे रेत का कुंवारापन पहली बार उन निशानों से टूटा हो। इससे मन में एक सिहरन भी हुई, हल्की उदासी भी घिर आई।

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना-ही-सोना घुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असम्भव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण बीतने पर वह लहू भी धीरे-धीरे बैंजनी और बैंजनी से काला पड़ गया। मैंने फिर एक बार मुड़कर दायीं तरफ़ पीछे देख लिया। नारियलों की टहनियाँ उसी तरह हवा में ऊपर उठी थीं। हवा उसी तरह गूँज रही थी पर पूरे दृश्य पर स्याही फैल गयी थी एक दूसरे से दूर खड़े झुरमुट, स्याह पड़कर, जैसे लगातार सिर धुन रहे थे और हाथ-पैर पटक रहे थे। मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और मुट्ठियाँ भींचता-खोलता कभी उस तरफ और कभी समुद्र की तरफ़ देखता रहा।

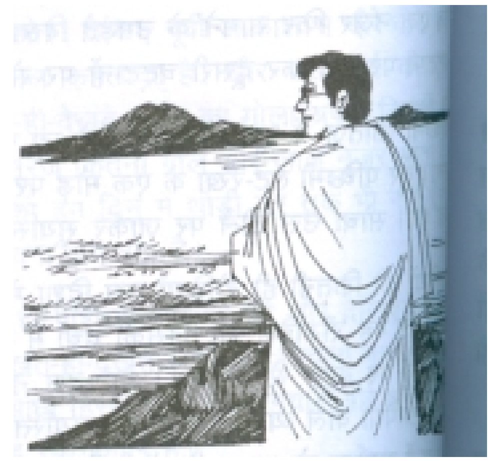

चित्र 27.1

शब्दार्थ

- द श्यपट – आँखों के आगे का विस्तार
- सुरमई – काली, मटमैली
- स्याह – काला
- सिर धुनना – बहुत दुखी होना
- अनाम – जिसका नाम न हो
- सम्मिश्रण – अच्छी तरह से मिलाया हुआ

अचानक खयाल आया कि मुझे वहाँ से लौटकर भी जाना है। इस खयाल से ही शरीर में कँपकँपी भर गई। दूर सैंडहिल की तरफ़ देखा। वहाँ स्याही में डूबे कुछ धुँधले रंग हिलते नज़र आ रहे थे। मैंने रंगों को पहचानने की कोशिश की, पर उतनी दूर से आकृतियों को अलग-अलग कर सकना सम्भव नहीं था। मेरे और उन रंगों के बीच स्याह पड़ती रेत के कितने ही टीले थे। मन में डर समाने लगा कि क्या अँधेरा होने से पहले मैं उन सब टीलों को पार करके जा सकूँगा? कुछ कदम उस तरफ़ बढ़ा भी पर लगा कि नहीं! उस रास्ते से जाऊँगा, तो शायद रेत में ही भटकता रह जाऊँगा। इसलिए सोचा बेहतर है नीचे समुद्र तट पर उतर जाऊँ– तट का रास्ता निश्चित रूप से केप होटल के सामने तक ले जाएगा। निर्णय तुरन्त करना था, इसलिए बिना और सोचे मैं रेत पर बैठकर नीचे तट की तरफ़ फिसल गया। पर तट पर पहुँचकर फिर कुछ क्षण बढ़ते अँधेरे की बात भूला रहा। कारण था तट की रेत। यूँ पहले भी समुद्र तट पर कई-कई रंगों की रेत देखी थी। सुरमई, खाकी, पीली और लाल। मगर जैसे रंग उस रेत में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे। कितने ही अनाम रंग थे वे, एक-एक इंच पर एक-दूसरे से अलग और एक-एक रंग कई-कई रंगों की झलक लिए हुए। काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत के आकार में ढाल देने से रंगों के जितनी तरह के अलग-अलग सम्मिश्रण पाये जा सकते थे, वे सब यहाँ थे और उनके अतिरिक्त भी बहुत-से रंग थे। मैंने कई अलग-अलग रंगों की रेत को हाथ में लेकर देखा और मसल कर नीचे गिर जाने दिया। जिन रंगो को हाथों से नहीं छू सका, उन्हें पैरों

से मसल दिया। मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था। यह सोचकर कि फिर किसी दिन आकर उस रेत को बटोरूँगा, मैं उदास मन से वहाँ से आगे चल दिया।

समुद्र में पानी बढ़ रहा था। तट की चौड़ाई धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। एक लहर मेरे पैरों को भिगो गई, तो सहसा मुझे खतरे का एहसास हुआ। मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा। तट का सिर्फ़ तीन-तीन, चार-चार फुट हिस्सा पानी से बाहर था। लग रहा था कि जल्दी ही पानी उसे भी अपने अन्दर समा लेगा। एक बार सोचा कि खड़ी रेत से होकर फिर ऊपर चला जाऊँ। पर वह स्याह पड़ती रेत इस तरह दीवार की तरह उठी थी कि उस रास्ते जाने की कोशिश करना ही बेकार था। मेरे मन में खतरा बढ़ गया। मैं दौड़ने लगा। दो-एक और लहरें पैरों के नीचे तक आकर लौट गई। मैंने जूता उतारकर हाथ में ले लिया। एक ऊँची लहर से बचकर इस तरह दौड़ा जैसे सचमुच वह मुझे अपनी लपेट में लेने आ रही हो। सामने एक ऊँची चट्टान थी। वक्त पर अपने को सँभालने की कोशिश की, फिर उससे टकरा गया। बाहों पर हल्की खरोंच आ गई, पर ज़्यादा चोट नहीं लगी। चट्टान पानी के अन्दर तक चली गई थी–उसे बचाकर आगे जाने के लिए पानी में उतरना आवश्यक था। पर इस समय पानी की तरफ़ पाँव बढ़ाने का मेरा साहस नहीं हुआ। मैं चट्टान की नोकों पर पैर रखता किसी तरह उसके ऊपर पहुँच गया। सोचा नीचे खड़े रहने की अपेक्षा वह अधिक सुरक्षित होगा। पर ऊपर पहुँचकर लगा जैसे मेरे साथ मज़ाक किया गया हो। चट्टान के उस तरफ तट का खुला फैलाव था – लगभग सौ फुट का। कितने ही लोग वहाँ टहल रहे थे। ऊपर सड़क पर जाने के लिए वहाँ से रास्ता भी बना था। मन से डर निकल जाने से मुझे अपने आप काफ़ी हल्का लगा और मैं चट्टान से नीचे कूद गया।

रात केप होटल का लॉन। अँधेरे में हिन्द महासागर को काटती हुई स्याह लकीरें–एक पौधे की टहनियाँ। नीचे सड़क पर टार्च जलाता-बुझाता एक आदमी। दक्षिण-पूर्व के क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम-सी रोशनी।

सूर्योदय। हम आठ आदमी 'विवेकानन्द चट्टान' पर बैठे थे। चट्टान तट से सौ-सवा-सौ गज आगे समुद्र के बीच जाकर है– वहाँ, जहाँ बंगाल की खाड़ी की भौगोलिक सीमा समाप्त होती है। मेरे अलावा तीन कन्याकुमारी के बेकार नवयुवक थे जिनमें से एक ग्रेजुएट था। चार मल्लाह थे जो एक छोटी-सी मछुआ नाव में हमें वहाँ लाए थे। नाव क्या

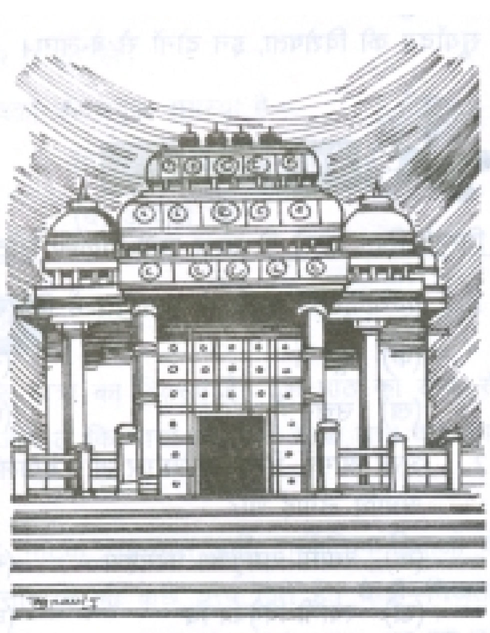

चित्र 27.2 विवेकानंद रॉक

टिप्पणी

शब्दार्थ

एहसास	– अनुभव
ग्रेजुएट	– बी.ए. या उसके समकक्ष उपाधि प्राप्त
स्थगित	– टालना, रोकना
अर्जियाँ	– आवेदन-पत्र
दार्शनिक	– दर्शनशास्त्र संबंधी
बाइना-क्यूलर	– एक यंत्र जिससे छोटी चीज़ बड़ी, और दूर की चीज़ पास नज़र आती है।
कडल-काक	– एक प्रकार का पक्षी
अर्घ्य	– जल चढ़ाना
बेलाग	– निश्चिंत

थी, रबड़-पेड़ के तीन तनों को साथ जोड़ लिया गया था, बस। नीचे की नुकीली चट्टानों और ऊपर की ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह नाव को उस तरफ़ ला रहे थे, तो मैंने आसमान की तरफ़ देखते हुए उतनी देर अपनी चेतना को स्थगित रखने की चेष्टा की थी, अपने अन्दर के डर को दिखावटी उदासीनता से ढके रखना चाहा था। पर जब चट्टान पर पहुँच गए, तो डर मेरी टाँगों में उतर गया क्योंकि वहाँ बैठे हुए भी वे हल्के-हल्के काँप रही थीं।

ग्रेजुएट नवयुवक मुझे बता रहा था कि कन्या-कुमारी की आठ हज़ार की आबादी में कम-से-कम चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक ऐसे हैं जो बेकार हैं। उनमें से सौ के लगभग ग्रेजुएट हैं। उनका मुख्य धन्धा है नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और बैठकर आपस में बहस करना। वह खुद वहाँ फ़ोटो-एल्बम बेचता था। दूसरे नवयुवक भी उसी तरह के छोटे-मोटे काम करते थे। ''हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धान्तों पर बहस करते हैं'', वह कह रहा था, ''इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।''

पानी और आकाश में तरह-तरह के रंग झिलमिलाकर, छोटे-छोटे द्वीपों की तरह समुद्र में बिखरी स्याह चट्टानों की ओट से सूर्य उदित हो रहा था। घाट पर बहुत-से लोग उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए एकत्रित थे। घाट से थोड़ा हटकर गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे सरकारी मेहमानों को सूर्योदय के समय की कॉफ़ी पिला रहे थे। दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख मालाएँ दिखला रही थीं। वे लोग दोनों काम साथ-साथ कर रहे थे–मालाओं का मोल-तोल और अपने बाइनाक्यूलर्स से सूर्यदर्शन। मेरा साथी अब मुहल्ले-मुहल्ले के हिसाब से मुझे बेकारी के आँकड़े बता रहा था। बहुत-से कडल-काक हमारे आस-पास तैर रहे थे–वहाँ की बेकारी की समस्या और सूर्योदय की विशेषता, इन दोनों से बे-लाग।

– मोहन राकेश

बोध प्रश्न 27.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर सही (√) का चिह्न लगाइए।

1. कन्याकुमारी भारत के मानचित्र में किधर की ओर स्थित है–

   (क) पूर्व में (ग) दक्षिण में

   (ख) उत्तर में (घ) पश्चिम में

2. अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी के संगम स्थल पर किसने समाधि लगाई थी?

   (क) स्वामी रामकृष्ण परमहंस (ग) स्वामी दयानंद सरस्वती

   (ख) स्वामी विवेकानंद (घ) स्वामी चिन्मयानंद

3. लेखक का पूरा शरीर सिहर गया, क्योंकि–
   (क) वह लोगों की भीड़ देखकर डर गया।
   (ख) सामने समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थी।
   (ग) चारों ओर अँधेरा छा गया था।
   (घ) वह जिस चट्टान पर खड़ा था वह बढ़ते पानी में घिर गई थी।
4. लेखक के अनुसार सैंडहिल के रंगीन होने का कारण था–
   (क) बहुत से लोगों की उपस्थिति।
   (ख) चारों ओर रंगीन रेत बिखरी हुई थी।
   (ग) सूर्य की रंग-बिरंगी किरणें सैंडहिल पर पड़ रही थीं।
   (घ) बहुत से लोग सैंडहिल पर लाल, पीला, हरा, नीला रंग बिखेर रहे थे।
5. पीछे दाईं तरफ़ लेखक को दूर-दूर हटकर नज़र आ रहे थे–
   (क) पक्षियों के झुंड
   (ख) पशुओं के झुंड
   (ग) लोगों का रेला
   (घ) नारियलों के झुरमुट
6. सूर्यास्त देखने के बाद वापस लौटते हुए सहसा लेखक को एहसास हुआ कि
   (क) कहीं चोर-उचक्के उसे लूट न लें।
   (ख) कोई भूत-प्रेत उससे चिपट न जाए।
   (ग) समुद्र की लहरें उसे चारों ओर से कहीं घेर न लें।
   (घ) तट-रक्षक उसे गिरफ़्तार न कर लें।
7. कन्याकुमारी के शिक्षित नवयुवकों की प्रमुख समस्या है–
   (क) पीने के पानी की।
   (ख) बेकारी की।
   (ग) विवाह की।
   (घ) आवास की।

27.3 आइए समझें

यह पाठ एक यात्रा-वृत्तांत यानी कि यात्रा का विवरण है। इस पाठ को ठीक से समझने के लिए आइए, पहले यह जाने लें कि यात्रा-वृत्तांत के मुख्य तत्त्व क्या-क्या हैं।

आप जानते हैं जिस प्रकार कहानी, नाटक, उपन्यास आदि साहित्यिक-विधाओं के तत्त्व होते हैं, उसी प्रकार यात्रा-वृत्तांत के भी कुछ तत्त्व होते हैं। ये हैं–निजता, स्थानीयता, तथ्यात्मकता तथा चित्रात्मक सरल भाषा का प्रयोग। आइए, अब हम यह देखें कि 'आखिरी चट्टान' पाठ में ये विशेषताएँ मिलती हैं या नहीं।

यात्रा-साहित्य के तत्त्वों के आधार पर पाठ की समीक्षा

निजता

यात्रा-साहित्य में लेखक के अपने अनुभवों का वर्णन होता है, दूसरों के अनुभवों का नहीं। इन रचनाओं के माध्यम से हम लेखक के निजी जीवन के बारे में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों को जानने में समर्थ हो जाते हैं। लेखक यात्रा के दौरान प्राकृतिक दृश्यों में स्वयं को पूरी तरह समा लेता है, वह चेतनाहीन-सा उन्हें देखता रहता है। एक उदाहरण देखिए– *'तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ।* इसी प्रकार– *'उस दृश्य के बीच मैं जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा– बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान।'*

इस रचना के निम्नलिखित अंश को पढ़कर हमें ज्ञात होता है कि लेखक कोई भी काम अधूरे मन से नहीं करता, वह कष्ट-कठिनाई से घबराता नहीं– *'जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किए। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था।'*

निजता के अंतर्गत आत्मीयता का भाव भी जुड़ा हुआ है। आत्मीयता का अर्थ यह है कि लेखक ने जिन स्थानों या व्यक्तियों का वर्णन किया है, उनमें या उनके साथ वह पूरी तरह रम पाया है या नहीं। पूरी तरह रम जाना ही आत्मीयता है। यह निजता या आत्मीयता ही यात्रा-वृत्तांत को पर्यटक गाइड से अलग करती है। 'आखिरी चट्टान' रचना से उद्धृत निम्नलिखित अवतरण से ज्ञात होता है कि लेखक का मन समुद्र तट की रेत में किस कदर रम गया हैं– *'मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था, यह सोचकर कि फिर किसी दिन आकर उस रेत को बटोरूँगा, मैं उदास मन से वहाँ से आगे चल दिया।*

स्थानीयता

स्थानीयता से आशय होता है कि यात्रा-वर्णन के लिए लेखक एक स्थान-विशेष को अपना विषय चुनता है। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थान, नगर, वन, समुद्र आदि अपने प्राकृतिक सौंदर्य, रीतिरिवाज़, संस्कृति-कला आदि की अमिट छाप लेखक के मन पर अंकित कर देते हैं। अतः जब वह इन सबके बारे में लिखने बैठता है तो उन विशेषताओं को अवश्य प्रकट करता है जो उस स्थान से जुड़ी हैं। उदाहरण के लिए 'आखिरी चट्टान' से लिए गए निम्नलिखित अंश को देखिए जिसमें लेखक ने कन्याकुमारी में स्थित विवेकानंद चट्टान का प्रभावशाली वर्णन किया है: *'अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी–इन तीनों के संगम-स्थल-सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी, हर तरफ़ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी।'* अपने असीम प्रकृति प्रेम के कारण मोहन राकेश ने 'आखिरी चट्टान' में कन्याकुमारी के मंदिर, पच्छिमी तट रेखा पर स्थित सैंडहिल, सैंडहिल के पीछे पश्चिमी क्षितिज, सागर-तट के नारियलों के झुरमुट, अनेक रंगों की रेत, उफनती-मचलती हुई सागर-लहरों का अत्यंत, मोहक वर्णन किया है, जिससे सिद्ध

होता है कि लेखक ने इस पाठ में स्थान-विशेष के साथ निजता या आत्मीयता स्थापित की है।

तथ्यात्मकता

अपने यात्रा-वृत्तांत में लेखक जिस स्थान, व्यक्ति या अन्य वस्तुओं का वर्णन करता है, पाठकों को उनके बारे में तथ्यात्मक जानकारी भी देता चलता है। इससे पाठक यात्रा किए बिना ही उन तमाम तथ्यों से परिचित हो जाता है। तथ्यों के विवरण से स्थान या वस्तु-विशेष का अधिक सजीव चित्र उभरता है। इसीलिए तथ्यात्मकता को स्थानीयता का एक पूरक गुण भी माना जाता है। 'आखिरी चट्टान' के इस अंश को देखिए:

हिन्द महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थी।'

इसी प्रकार 'सैंडहिल पर बहुत से लोग थे। आठ-दस नवयुवतियाँ, छह-सात नवयुवक, दो-तीन गांधी टोपियों वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेन्ट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफ़ी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैंडहिल बहुत रंगीन हो उठी थी।'

'सूर्यास्त और सूर्योदय के समय सूर्य की किरणों द्वारा रेत पर बिखेरा गया रंग', 'समुद्र के पानी का सुनहरी से लाल, लाल से बैंजनी और अंत में काला-स्याह पड़ना' आदि अनेक तथ्यात्मक विवरण इस पाठ में मौजूद हैं।

चित्रात्मक सरल भाषा

यात्रा-वृत्तांत में स्थान, व्यक्ति आदि का विवरण ही अधिक होता है। इन विवरणों को प्रस्तुत करते समय यात्रा-साहित्य का लेखक सरल, रोचक और चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करता है। इससे जहाँ वर्णन में रोचकता आती है, वहीं पाठक भी उस विवरण को मनोयोग से पढ़ता है। यात्रा साहित्य के लेखक और पाठक में बातचीत का सा संबंध बना रहता है। 'आखिरी चट्टान' की भाषा भी ऐसी ही चित्रात्मक, सरल और आम बोलचाल की भाषा है। एक उदाहरण देखिए– *'रात। केप होटल का लॉन। अँधेरे में हिन्द महासागर को काटती हुई स्याह लकीरें–एक पौधे की टहनियाँ, नीचे आदमी। दक्षिण पूर्व के क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम-सी रोशनी'*। एक और उदाहरण देखिए–

'पानी और आकाश में तरह-तरह के रंग झिलमिलाकर, छोटे-छोटे द्वीपों की तरह समुद्र में स्याह चट्टानों की ओट से सूर्य उदित हो रहा था। घाट पर बहुत से लोग उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए एकत्रित थे। दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख और मालाएँ दिखला रही थीं।

यात्रा-साहित्य का लेखक जिस स्थान-विशेष का वर्णन करता हैं, वहाँ के जन-जीवन संबंधी अनुभवों को अपनी रचना में पिरोता है। ऐसा करते समय बहुत से विदेशी शब्दों

का प्रयोग हो जाना स्वाभाविक है। 'आखिरी चट्टान' पाठ में भी उर्दू , अंग्रेज़ी, आदि के शब्दों का समावेश हुआ है परंतु ये शब्द पाठक के सामान्य ज्ञान के हैं। इनके प्रयोग से अर्थ-ग्रहण में बाधा उत्पन्न नहीं होती। जैसे – केप होटल, बाथ टैंक, स्याह, लकीरें, हिस्सा, होश, नज़र, सैंडहिल, मिशनरी, केनवस, वीरान, खयाल, एहसास, लॉन, ग्रेजुएट, फोटो-एल्बम, मेहमान, बाइनाक्यूलर आदि।

इसी प्रकार सामान्य बोलचाल के शब्दों की भी इस पाठ में कमी नहीं है। जैसे – टोलियाँ, टीला, झुरमुट, टहनियाँ, लहू, मुट्ठियाँ, भींचता, कँपकँपी, लपेट, खरोंच, मछुआ, नाव, धंधा, मोल-तोल, मुहल्ले आदि। इन सामान्य बोलचाल के शब्दों के प्रयोग से वर्णन में स्वाभाविकता, रोचकता और चित्रात्मकता आ गई है। अतः हम कह सकते हैं कि 'आखिरी चट्टान' शीर्षक रचना में यात्रा-वृत्तांत के सभी आवश्यक तत्त्वों का समावेश हो गया है।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. यात्रा-वृत्तांत के चार तत्त्वों का उल्लेख कीजिए–

   (क) .... (ख) ....

   (ग) .... (घ) ....

2. पाठ में से किन्हीं दो अंशों का चुनाव कीजिए जिनसे लेखक के प्रकृति-प्रेमी होने का पता चलता है।

   (क) ....

   (ख) ....

3. सूर्यास्त देखने के लिए आतुर लेखक की टाँगें थक रही थीं पर मन क्यों नहीं थक रहा था?

   ....

   ....

4. इस पाठ से पाँच विदेशी शब्द और पाँच बोलचाल के शब्द चुनकर लिखिए:

   (क) पाँच विदेशी शब्द: ....

   (ख) पाँच बोलचाल के शब्द: ....

27.4 प्रमुख व्याख्याएँ

आपने पूरा पाठ पढ़ लिया है और यात्रा-वृत्तांत के तत्त्वों से भी आप परिचित हो चुके हैं। आइए, पाठ में आए कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या को पढ़कर समझते हैं–

अंश-1

'मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था—शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।'

संदर्भ

यह गद्यांश मोहन राकेश द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत 'आखिरी चट्टान' से लिया गया है।

प्रसंग

लेखक हिन्द महासागर में स्थित एक ऊँची-सी चट्टान पर खड़ा होकर चट्टानों से टकराती हुई लहरों को देख रहा था, उसके सामने विशाल समुद्र दूर-दूर तक फैला हुआ था। इन पंक्तियों में लेखक ने समुद्र की व्यापकता का वर्णन किया हैं।

व्याख्या

लेखक कन्याकुमारी मंदिर के सामने समुद्र में स्थित एक चट्टान पर खड़ा होकर समुद्र के फैलाव को देख रहा था। यह फैलाव इतना व्यापक था कि लेखक की नज़र दाएँ-बाएँ और सामने जहाँ-जहाँ तक जा रही थी, उसे सागर के पानी के अलावा और कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। लेखक यह देखकर सहसा दार्शनिक-सा हो उठता है। वह अपने पूरे होशो-हवास से अनुभव करता है कि समुद्र की ताकत कितनी अधिक है साथ ही उसे समुद्र की व्यापकता की अपार शक्ति का भी एहसास होता है। अभिप्राय यह है कि समुद्र जितना ताकतवर है, उतना ही व्यापक भी है। उसके विस्तार और उसकी ताकत में से कौन अधिक शक्तिशाली है। यह कह पाना बहुत मुश्किल है।

अंश-2

'तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ। एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा— बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान।'

संदर्भ—पूर्ववत्

प्रसंग

इस गद्यांश में लेखक कन्याकुमारी मंदिर के सामने समुद्र में स्थित जिस चट्टान पर खड़ा है उसके बाईं ओर बंगाल की खाड़ी है, सामने हिन्द महासागर और दाईं ओर अरब सागर। लेखक की नज़र जहाँ-जहाँ तक पहुँच सकती थी, वहाँ-वहाँ तक समुद्र का पानी फैला हुआ था। सागर के इस विस्तार को देखकर लेखक ठगा-सा रह गया।

व्याख्या

सागर में स्थित एक ऊँची-सी चट्टान पर लेखक खड़ा है। उसके बाएँ-दाएँ और

सामने दूर-दूर तक समुद्र-ही-समुद्र है। लेखक पूरे मनोयोग से एक साथ उस विस्तार को देखता है, और उस संपूर्ण फैलाव को अपनी आँखों में समेट लेता है। उस समय लेखक सब कुछ भूल गया। यहाँ तक कि उसे अपने अस्तित्व का एहसास भी नहीं रहा। वह निश्चेष्ट, निष्प्राण-सा हो गया। वह यह भी भूल गया कि वह एक यात्री है, जो उस सागर में सूर्य को डूबते और उदय होते हुए देखने के लिए बहुत दूर से यहाँ तक आया है। उस दृश्य को देखकर लेखक इतना हक्का-बक्का सा रह गया कि खुद भी एक प्राणवान् व्यक्ति न रहकर एक अप्राण दृश्य-सा ही बन गया। उसे अनुभव हुआ कि उन बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच में जैसे वह भी एक छोटी-सी चट्टान हो। अभिप्राय यह है कि लेखक संज्ञाहीन, किंकर्त्तव्य-विमूढ़, ठगा-सा सागर के विस्तार को देखता रह गया।

विशेष

यात्रा-वृत्तांत के लेखक की विशेष शैली होती है। वह सामान्य शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने कथन में काव्यात्मकता उत्पन्न कर देता है। इस कथन में *'मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ'* एक भी शब्द कठिन या साहित्यिक नहीं है। फिर भी पूरा वाक्य विशिष्ट कथन बन गया है। लेखक के उस कथन में भी बहुत सुंदरता आ गई है– *'उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी सी चट्टान के समान'*, लेखक का स्वयं को चट्टानों के बीच एक प्राणहीन चट्टान-सा अनुभव करना ही यह सिद्ध करता है कि समुद्र की विशालता को देखकर लेखक कितना अवाक् और गद्गद हो गया।

अंश-3

अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और मैंने, सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।

संदर्भ–पूर्ववत्।

प्रसंग

लेखक सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए किसी ऊँचे-से स्थान की तलाश में था जहाँ से पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार नज़र आ सके। इस स्थान की खोज में उसने कई रेतीले टीले पार किए और अंततः उसे एक ऐसा ऊँचा टीला मिल ही गया जहाँ से वह सूर्यास्त को पूरे विस्तार में देख सकता था।

व्याख्या

लेखक बहुत देर तक रेत में चलता रहा। समुद्र के किनारे सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए बहुत से लोग जा रहे थे। लेखक की इच्छा थी कि वह कोई ऐसा स्थान खोज पाए जहाँ से डूबते सूर्य का नज़ारा अपने पूरे खुले विस्तार में दिखाई दे सके। अनेक रेतीले टीलों को पार करते हुए वह अंत में एक ऐसे ही ऊँचे टीले पर पहुँच गया। चूँकि लेखक ने इस टीले को खोजने और उस पर चढ़ने में बहुत अधिक प्रयत्न किया था, इस कारण

उसे लगा कि कोशिश बेकार नहीं गई। उसे इस बात पर पूरा संतोष हुआ कि उसे सूर्यास्त देखने के लिए एक मनपसंद जगह मिल ही गई। उस टीले पर चढ़ जाने पर उसे ठीक वैसा ही सुख और संतोष मिला जैसा तेनजिंग और हिलेरी को पहली बार हिमालय की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने में मिला होगा। लेखक को अनुभव हुआ कि यह रेत का टीला भी एवरेस्ट से कम ऊँचा नहीं है और केवल उसी ने इस पर चढ़ने में पहली बार सफलता प्राप्त की है।

विशेष

एक ऊँचा टीला मिल जाने पर लेखक का अपनी संतुष्टि को एवरेस्ट विजय की संतुष्टि के समान दर्शाना वास्तव में सराहनीय है। इस कथन में मनोविज्ञान का यह सिद्धांत निहित है कि आदमी को अपनी खोज, अपने प्रयास और अपनी सफलता पर जो प्रसन्नता होती है, वह अन्य किसी परिस्थिति में नहीं होती। लेखक ने बड़ी खूबसूरती से अपनी मनोदशा का स्वाभाविक वर्णन किया है।

अंश-4

सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था। सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया-सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस तरह चमक रही थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेला गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा जैसे रेत का कुँवारापन पहली बार उन निशानों से टूटा हो। इससे मन में एक सिहरन भी हुई, हल्की उदासी भी घिर आई।

संदर्भ—पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए समुद्र-तट की रेत पर बड़ी देर तक चलता रहा, जब वह रेत के एक ऊँचे टीले पर चढ़ गया तो उस ऊँचाई से उसने नीचे रेत पर नज़र डाली। उसे रेत पर अपने पैरों के निशान दिखाई दिए।

व्याख्या

रेतीले टीले पर चढ़ कर लेखक को नीचे की सुनहली रेत पर अपने पाँवों के निशान दूर-दूर तक दिखाई दिए क्योंकि इसी रेत पर चल कर लेखक उस टीले पर चढ़ा था। रेत बड़ी साफ़, स्वच्छ, सुनहली और चमकदार थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण हुआ हो। उस पर बने अपने पैरों के निशानों को देखकर लेखक का मन सिहरन और ग्लानि से भर उठा। ऐसी साफ़, स्वच्छ, सुनहली रेत को अपने पाँवों से रौंदने के कारण उसे पश्चात्ताप हुआ कि उसके कारण रेत की पवित्रता नष्ट हो गई। वह इस अनुभूति से सिहर उठा और उसका मन अपने इस अपराध-बोध के कारण उदास हो गया।

विशेष

'रेत का कुँआरापन, में निहित मानवीकरण दर्शनीय है। निष्प्राण रेत लेखक के लिए

केवल रेत नहीं है, लेखक की दृष्टि में वह सप्राण हो उठी है। कविता में इसे ही मानवीकरण कहा जाता है। लेखक को यह देखकर अत्यंत दुख होता है कि कितनी साफ़, स्वच्छ, चमकीली रेत को रौंदकर उसने रेत की पवित्रता नष्ट कर दी है।

अंश-5

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना ही सोना घुल आया, पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था, वहाँ अब लहू बहता नज़र आने लगा।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए रेत के ऊँचे टीले पर चढ़ जाता है, जहाँ से वह पश्चिमी क्षितिज में सूर्य को धीरे-धीरे अस्त होते हुए देख रहा है।

व्याख्या

लेखक के सामने अरब सागर का जल दूर-दूर तक फैला हुआ है। आकाश में सूर्य का गोला धीरे-धीरे नीचे की ओर जाते हुए पानी को छू गया, अस्त होते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों ने अरब सागर के जल में जैसे सोना घोल दिया है। पर जल का रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि उस रंग को किस नाम से पुकारा जाए। अब सूर्य इतनी जल्दी-जल्दी नीचे की ओर जा रहा था जैसे कोई शक्ति उसे पिघले हुए लावे में लुप्त होने के लिए विवश कर रही हो। डूबते हुए सूर्य की किरणों ने पानी को इतना लाल बना दिया था कि लेखक को वह पिघलते हुए लावे की तरह लग रहा था। थोड़ी देर पहले पानी पर जो पीला प्रकाश फैला हुआ था, देखते ही देखते वह एकदम लाल नजर आने लगा। वह ऐसा लग रहा था मानो दूर-दूर तक लहू बह रहा हो।

विशेष

मोहन राकेश ने इस गद्यांश में सौंदर्य जैसे अमूर्त विषय को मूर्त बना दिया है। डूबते हुए सूर्य की किरणों के पल-पल परिवर्तित रूप-रंग को भाषा में व्यक्त करना बहुत कठिन है, पर लेखक ने अपने सटीक शब्द-प्रयोगों से इसमें सफलता प्राप्त की है। *'सोना ही सोना घुल गया', 'पानी के लावे में डूबना' 'सोना बहना', 'लहू बहना'* जैसे प्रयोग लेखक की विशिष्ट कथन-शैली के नमूने हैं। प्रकृति के बाह्य सौंदर्य को मन में बसाकर उसे सार्थक शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने में लेखक को सराहनीय सफलता प्राप्त हुई है। यहाँ सूर्य का मानवीकरण है। वह किसी डूबते हुए बेबस व्यक्ति जैसा चित्रित किया गया है।

पाठगत प्रश्न 27.3

पठित पाठ के आधार पर सही विकल्प का चयन कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'शक्ति का विस्तार और विस्तार की शक्ति' में लेखक का वर्ण्य विषय है-

   (क) आकाश (ग) समुद्र का सुनहला पानी

   (ख) समुद्र (घ) उपर्युक्त तीनों

2. 'मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ' पंक्ति का आशय है–

   (क) लेखक चेतना शून्य हो गया।

   (ख) लेखक अपना नाम भूल गया।

   (ग) उसको लगा कि वह कहीं कुछ भूल आया है।

   (घ) वह आश्चर्य चकित हो गया।

3. 'मैंने सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो' यहाँ 'सर' से आशय है–

   (क) सिर झुकना। (ग) पहुँचकर विजय प्राप्त करना।

   (ख) देखना (घ) उपर्युक्त तीनों।

4. 'मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा' ये निशान बने–

   (क) स्वप्न देखते समय।

   (ख) वापस लौटते समय।

   (ग) वहाँ आए अन्य पर्यटकों के पैरों से।

   (घ) सूर्यास्त देखने के लिए जाते समय।

5. 'कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था वहाँ अब लहू बहता नज़र आने लगा' पंक्ति का आशय है–

   (क) समुद्र खून से भर गया।

   (ख) लाल रंग बहने लगा।

   (ग) किसी ने समुद्र में रंग मिला दिया था।

   (घ) समुद्र का पानी सूर्य के लाल रंग के प्रकाश से लाल दिखने लगा था।

27.5 भाषा-शैली

इस पाठ में लेखक की भाषा बहुत सरल और प्रवाहयुक्त है। तत्सम शब्दों का प्रयोग

टिप्पणी

बहुत कम हुआ है। समाधिस्थ, क्षितिज, अपेक्षया, सूर्योदय, शृंखला, दृश्यपट, दार्शनिक जैसे कुछ तत्सम शब्द अवश्य आए हैं परंतु ये शब्द पाठ के प्रसंगानुकूल है। इन्हें समझने में खास कठिनाई नहीं होती। कुछ विदेशी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। ये शब्द कहने को तो विदेशी हैं लेकिन अब हिंदी भाषा में इतने रच-बस चुके हैं कि हिंदी के ही लगते हैं, जैसे—लकीरें, स्याह, हिस्सा, सैंडहिल, मिशनरी, केनवस, सर, वीरान, बेबसी, सुरमई, एहसास, ग्रेजुएट, बाइनाक्युलर्स आदि। ये सभी शब्द सामान्य बोलचाल के शब्द हैं और अर्थग्रहण में बाधक नहीं होते। स्थान-स्थान पर भाषा का रूप चित्रात्मक भी हो गया है। इससे वर्णन में चार चाँद लग गए हैं।

शैली में वर्णनात्मकता है। वर्णन में बिंबात्मकता सहज रूप से आ गई है। लेखक ने सभी प्रसंगों, दृश्यों, स्थानों तथा अनुभवों का वर्णन इस कुशलता से किया है कि पाठक की रुचि बढ़ती जाती है और लेखक पाठक के साथ एकता स्थापित कर सकने में पूर्ण रूप से सफल रहा है।

इस प्रकार लेखक ने इस पाठ में यात्रा-साहित्य के अनुकूल भाषा-शैली का चयन किया है।

हिंदी में संधि, समास, उपसर्ग और प्रत्यय के योग से नए शब्द बनते हैं। इस बात का ज्ञान आप पिछले पाठों में प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ हम कुछ शब्द दे रहे हैं। आप इन्हें देखिए ये शब्द कैसे बने हैं और इस बात पर ध्यान दीजिए:

विवेकानंद, समाधिस्थ, सूर्यास्त, नवयुवक, रंगहीन, सार्थकता, पच्छिमी, असंभव, दृश्यपट, दार्शनिक, सूर्योदय।

इनमें संधि के कारण बने शब्द हैं:

विवेकानंद,	सूर्यास्त,	सूर्योदय
(विवेक+आनंद)	(सूर्य+अस्त)	(सूर्य+उदय)

नवयुवक, दृश्यपट समासयुक्त शब्द हैं।

नव (विशेषण) + युवक (संज्ञा) दोनों के योग से नया शब्द नवयुवक बन गया।

दृश्य पटः दृश्य का पट, 'का' का लोप होने पर बना 'दृश्यपट'। इस प्रकार जब दो शब्दों के बीच में किसी विभक्ति अर्थात्—से, का, की, के, रा, री, रे आदि का लोप हो जाता है वहाँ समास होता हैं।

असंभवः शब्द में संभव से पूर्व 'अ' लगने से शब्द में परिवर्तन के साथ-साथ अर्थ भी बदल गया है। ऐसे शब्दांश जो शब्द से पहले जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, **उपसर्ग** कहलाते हैं। यह बात आप पहले भी समझ चुके हैं।

समाधिस्थ, रंगहीन, सार्थकता, पच्छिमी, दार्शनिक शब्दों में प्रत्यय के कारण परिवर्तन आया है।

जब शब्दांश शब्द के बाद में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं तब वे 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

समाधि+स्थ = समाधिस्थ   रंग+हीन = रंगहीन   सार्थक+ता =सार्थकता
पच्छिम+ई = पच्छिमी   दर्शन+इक = दार्शनिक

पाठगत प्रश्न 27.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. इस पाठ की शैली किस प्रकार की है–
   (क) व्यंग्य प्रधान   (ग) बनावटी
   (ख) वर्णानात्मक   (घ) कथात्मक
2. 'सूर्योदय' शब्द बना है–
   (क) समास द्वारा   (ग) उपसर्ग द्वारा
   (ख) प्रत्यय द्वारा   (घ) संधि द्वारा
3. 'अन्' उपसर्ग निम्नलिखित में से किस शब्द में जुड़ा है–
   (क) अनुसार   (ग) अनादि
   (ख) अनुज   (घ) अनश्वर
4. प्रत्यय जुड़ता है–
   (क) मूल शब्द से पूर्व   (ग) शब्द के बाद में
   (ख) मूल शब्द के बीच में   (घ) इनमें से कोई नहीं

भाषा कार्य

आप संज्ञा और विशेषणों के बारे में तो जानते ही हैं। किसी वस्तु, स्थान अथवा व्यक्ति के नाम को **संज्ञा** कहते हैं और संज्ञा के बारे में बताने वाले या उसकी विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहा जाता है। हिंदी में संज्ञा से विशेषण और विशेषण से संज्ञा शब्द बनाए जा सकते हैं, जैसे:

संज्ञा → विशेषण

सोना → सुनहरा   रेत → रेतीला
कंकर → कंकरीला   नोक → नुकीला
उत्तर → उत्तरी   स्थान → स्थानीय
सुरमा → सुरमई   रंग → रंगीन

विशेषण → संज्ञा

स्याह → स्याही   ऊँचा → ऊँचाई
लाल → लाली, लालिमा   बच्चा → बचपन

पीला → पीलाई, पीलिमा, पीलापन सुंदर → सुंदरता
गोल → गोला, गोलाई बूढ़ा → बुढ़ापा

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए–
   बुद्धि, पत्थर, ऊबना, पहाड़, दर्शन, दक्षिण, न्याय

   ....

   ....

2. निम्नलिखित शब्दों से संज्ञा शब्द बनाइएः
   सफ़ेद, हरा, धुँधला, चमकीला, गहरा, उड़ना

   ....

   ....

27.6 आपने क्या सीखा

1. कन्याकुमारी के समीप समुद्र में स्थित विवेकानंद चट्टान बड़ी भव्य है।
2. बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर और अरब सागर के संगम-स्थल पर सागर का असीम विस्तार है।
3. अरब सागर के तट पर स्थित सैंडहिल से हजारों लोग पश्चिमी क्षितिज में सूर्यास्त का मनमोहक दृश्य देखते हैं।
4. सूर्यास्त के समय सागर-तट की रेत और सागर-जल अनेक रंग-रूप बदलता है।
5. लेखक को पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में सूर्यास्त देखने की इच्छा थी, इस कारण उसे रेत में चलने और चट्टानों पर चढ़ने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा। अंततः लेखक अपने प्रयत्न की सार्थकता पर संतुष्ट हुआ।
6. सागर-तट से अपने होटल में लौटते समय लेखक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
7. रात में समुद्र में सिर्फ़ काली छायाओं की लकीरें मात्र दिखाई देती हैं।
8. कन्याकुमारी में सूर्योदय का दृश्य भी बड़ा आकर्षक होता है।
9. यात्रा-साहित्य के मुख्य तत्त्व- निजता, स्थानीयता, तथ्यात्मकता और चित्रात्मकता है। यात्रा-साहित्य के तत्त्वों पर यह रचना खरी उतरती है। इस पाठ की भाषा-शैली सरल, रोचक, प्रवाहमान और आत्मीयतापूर्ण है।
10. मोहन राकेश हिंदी कहानी, एकांकी और नाटक साहित्य लिखने के कारण प्रसिद्ध हैं। लेकिन वे यात्रा-साहित्य के भी सिद्धहस्त लेखक हैं।
11. शब्दों का निर्माण कई प्रकार से होता है– मूल शब्द से पहले शब्दांश जोड़कर

(उपसर्ग), मूल शब्द के बाद शब्दांश जोड़कर (प्रत्यय), दो शब्दों के बीच विभक्ति का लोप (समास): दो शब्दों में आए वर्णों के मिलने पर किसी प्रकार के रूपांतरण से (संधि)।

27.7 योग्यता-विस्तार

(क) लेखक-परिचय

यह पाठ श्री मोहन राकेश द्वारा लिखा हुआ है, जिनका जन्म अमृतसर में 8 जनवरी 1925 में हुआ था। इन्होंने हिंदी और संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ दिनों तक शिक्षण कार्य किया। फिर 'सारिका' के संपादक बने। ये हिंदी के एक सुप्रसिद्ध नाटककार थे। 'आधे-अधूरे' 'आषाढ़ का एक दिन' 'लहरों के राजहंस' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं।

मोहन राकेश एक सफल यात्रा-साहित्य लेखक भी थे। ये अपनी गहन अनुभूति को सरल शब्दों में अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त थे। 1972 ई में सिर्फ़ 47 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

(ख) हिंदी में अनेक यात्रा-वृत्तांत लिखे गए हैं। आप कुछ महत्त्वपूर्ण यात्रा-साहित्य प्राप्त कर पढ़िए। आपकी जानकारी के लिए कुछ नाम यहाँ दिए जा रहे हैं:

- हरिद्वार की यात्रा (भारतेंदु हरिश्चंद्र)
- अमरीका दिग्दर्शन, अमरीका भ्रमण (सत्यदेव परिव्राजक)
- तिब्बत में सवा वर्ष, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा, किन्नर देश में, घुमक्कड़ शास्त्र (राहुल सांकृत्यायन)
- सुदूर दक्षिण पूर्व, पृथ्वी परिक्रमा (सेठ गोविंददास)
- देश-विदेश, मेरी यात्राएँ (रामधारी सिंह दिनकर)
- पैरों में पंख बाँधकर, उड़ते चलो। (रामवृक्ष बेनीपुरी)
- अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली। (अज्ञेय)

27.8 पाठांत प्रश्न

1. लेखक ने आखिरी चट्टान किसे कहा है?
2. पश्चिमी क्षितिज में अस्त होते हुए सूर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. निम्नलिखित कथनों का भाव स्पष्ट कीजिए:

   (क) 'मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था– शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।'

   (ख) 'तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ।'

(ग) 'बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान।'
(घ) 'कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था वहाँ अब लहू बहता नज़र आने लगा।'
(ङ) 'हम लोग सीपियों का गुदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं।'

4. यात्रा-साहित्य के तत्त्वों के आधार पर 'आखिरी चट्टान' की समीक्षा कीजिए।
5. निम्नलिखित की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए:
   (क) अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया, ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और मैंने, सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।
   (ख) सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना ही सोना ढुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था।
6. दो-दो उदाहरण देते हुए उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. निम्नलिखित की संधि कीजिए:
   नित्य+आनंद, वर्णन+आत्मक, सूर्य+उदय, पीत+अंबर

27.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ)
6. (ग) 7. (ख)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 1. (क) निजता (आत्मीयता) (ख) स्थानीयता,
(ग) तथ्यात्मकता, (घ) बोलचाल की सरल, चित्रात्मक भाषा।

2. (क) सूर्यास्त देखने के लिए लेखक के द्वारा किए गए अथक प्रयास वाला अंश।
(ख) रेत के रंगो को समेट लेने की इच्छा वाला प्रसंग।

3. लेखक के मन में सूर्यास्त देखने की बड़ी लालसा और उत्कंठा थी।

4. (क) तथा (ख) विद्यार्थी स्वयं करें।

27.2 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (घ)

27.3 1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग)